2026 Volume: 02 Issue: 02 www.ijrpa.com ISSN 2456-9995 Review Article

International Journal Research Publication Analysis

Page: 01-05

समकालीन हिन्दी आलोचना के संदर्भ में आलोचक जितेन्द्र श्रीवास्तव की वैचारिक दृष्टि का अध्ययन

***रश्मि किसन**

ओडिशा

Article Received: 03 January 2026
Article Revised: 23 January 2026
Published on: 11 February 2026

***Corresponding Author: रश्मि किसन**
ओडिशा

DOI: https://doi-doi.org/101555/ijrpa.7814

शोध सार: समकालीन हिंदी आलोचक जितेंद्र श्रीवास्तव अपने आलोचनात्मक लेखन में विविध समस्याओं पर विचार प्रस्तुत करते हुए कालजयी कृतियों पर केंद्रित आलोचना के माध्यम से साहित्य की गुणवत्ता और प्रासंगिकता में वृद्धि करने में सक्षम हुए हैं। अपने आलोचना-कर्म के माध्यम से वे कवियों और रचनाकारों के मूल्यांकन के साथ-साथ नई विचारधाराओं और विमर्शों के अंतर्द्वंद्वों को भी चिह्नित करते हैं। उनकी आलोचनात्मक कृतियों में कविता, कहानी, उपन्यास और सिनेमा—सभी पर सम्यक और संतुलित दृष्टि मिलती है, जो पाठक को सहज ही अपनी ओर आकर्षित करती है। स्त्री मुक्ति तथा दलित-वंचित वर्गों की सामाजिक उन्नति के संदर्भ में वे अपनी आलोचनात्मक रचनाओं के माध्यम से सामाजिक बंधनों को तोड़ने का प्रयास करते हैं। समकालीन चुनौतियों पर विचार करते हुए वे समाज की उन प्रवृत्तियों और द्वंद्वों पर भी प्रकाश डालते हैं, जो वर्तमान परिस्थितियों में उत्पन्न समस्याओं के समाधान की दिशा में सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

मूल शब्द: नैतिक मूल्य ,भारतीय समाज ,प्रगतिशील चेतना ,सामाजिक दायित्व ,जीवन मूल्य,नए दृष्टिकोण,नए प्रतिमान ,मानवीय मूल्य,संप्रेषणीयता ,साहचर्य और समझ ,आधुनिकबोध ।

प्रस्तावना: समकालीन हिंदी आलोचना की परिदृश पर बात करते हुए बहुत सारे आलोचक अलग अलग विचार रखते है। आज के समकालीन दौर में भारतीय समाज अनेक समस्याओं से जूझ रहा है । इस संकट से निकलने के लिए समाज में नैतिक मूल्यों,मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना,सामाजिक दायित्व,प्रगतिशील चेतना,जीवन मूल्यों का पहचान एवं नवीन दृष्टिकोण की आवश्यकता है।समकालीन आलोचक जितेंद्र श्रीवास्तव अपने आलोचना साहित्य में समकालीन स्तिथि एवं समकालीन समस्यायों पर खुल कर बात किए हैं । *उनकी अलोचना कर्म को पढ़ने से ये ज्ञात होता है कि साहित्य,समाज और*

समकालीन समस्याओं से बहुत गहरा परिचित रहा है। उनकी आलोचना कर्म में समकालीन हिन्दी कविता की चुनौतियाँ, भारतीय समाज और प्रेमचंद, धर्म, राष्ट्रीयता और प्रेमचंद, ऐतिहासिक दृष्टि और परंपरा बोध, समकालीन हिन्दी कविता की भारतीयता, दलित वंचित स्त्री जीवन संबंधी विचार, प्रतिबद्धता का प्रश्न, विचारधारा का प्रश्न, मनुष्यधर्मी चिंतन, साहचर्य का नया सौंदर्यबोध, कहानी एवं उपन्यास केंद्रित आलोचना में मानवीय संवेदना, कविता में प्रतिरोध, कविता में आत्मालोचन का साहस, साहचर्य और समझ, सम्प्रेषणीयता, परंपराबोध से विमुख, रुचियों की कट्टरता, दलित कविता में नए सौंदर्यशास्त्र का प्रश्न, मुख्यधारा में दलित– आदिवासी और स्त्री की उपस्थिति, कविता में लोकतत्व एवं ग्रामीण जीवन का यथार्थ का अभाव, ई- स्पेस का सही उपयोग, समकालीन साहित्य का अनादर, सौंदर्यबोध और ईर्ष्या की जकड़बंदी, सर्जनात्मक कल्पना पर प्रहार आदि विषय पर विचार रखें हैं।

आलोचक जितेंद्र श्रीवास्तव के अनुसार साहित्यिक रचना का सृजन तीन मुख्य कारण से किया जाता है। पहला कारण पाठकों का मनोरंजन के लिए । दूसरा कारण पाठकों को कुछ पल के लिये यथार्थ से दूर ले जाकर भावात्मक ख़ुशी दिला सके । तीसरा साहित्यकार किसी भी नवीन विचारधारा को समाज तक पहुँचा जा सके । जितेंद्र श्रीवास्तव जी के अनुसार ***आज के साहित्यिक परिदृश्य में मनोरंजक साहित्य आलोचना के बाहर है, इन्हें भी मूल्यांकन की आवश्यकता है ।*** इनका मुख्य विषय 'प्रेम' होता है , जिसका चित्रण बहुत ही हल्का और सस्ता होता है । कुछ में गंभीर मिल जाती है । मूल्यांकन से ही साहित्यिक कृतिओं का स्तर ऊपर उठ सकता है ।नवीन विचारधारा को समाज के सामने साहित्यकारों के द्वारा प्रस्तुत करना यह मुख्यतः प्रशंसनीय प्रयत्न है, क्योंकि समकालीन समाज में नवीन विचारधारा की अत्यंत आवश्यक है ।अगर हमें समाज को बदलनी है तो इसका शुरुआत वर्तमान समय से ही प्रयत्न करना चाहिए । नए दृष्टिकोण, नए विचार और नए प्रतिमानों की स्थापना समकालीन समाज में आवश्यक है। समकालीन आलोचना साहित्य ही नई दृष्टिकोण समाज में स्थापना करने की शक्ति रखती है।

समकालीन हिन्दी कविता की भारतीयता पर उनका विचार है कि " ***जहां तक समकालीन हिन्दी कविता की भारतीयता की बात है तो यह कहना उचित होगा कि हिन्दी कविता की भारतीयता– सर्वाधिक उसकी विषयवस्तु में ही है ।***" मानवीय सम्बन्ध पर लिखा गया साहित्य निश्चित ही शेष दुनिया से अलग है, हम उसे ठेठ भारतीय मान सकते हैं । उन्होंने हिन्दी दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र मनुष्य की व्यापक मुक्ति पर विचार किए हैं । उनका मानना है कि दलित सर्वहारा की पूर्ण मुक्ति तभी संभव है जब सामाजिक और मनोगत सरंचना में परिवर्तन होगी । आलोचक जितेंद्र श्रीवास्तव जी ने अपने आलोचनात्मक लेखन में दलित कवियों की कविता में निहित प्रतिरोध के स्वर को उजागर किया है

। हीरा डोम , देवेंद्र कुमार ,ओम प्रकाश वाल्मीकि आदि कवियों की कविताओं पर आलोचना किए है जिसमें दलित वर्गों की सामाजिक स्थिति पर दृष्टि डाले है । दलित वर्गों के अलावा उन्होंने स्त्री दृष्टि पर भी विचार किए है। दलित के समान स्त्री भी समाज में पद दलित है । घरेलू हिंसा एवं कार्यालयों में भी हिंसा का शिकार हो रही है । आज स्त्री अपने हक़ के लिए आवाज़ उठाना सीख गई है । पुरुषों के बराबर स्त्री भी सभी क्षेत्र में अब्वल आ रही है । साहित्यिक के क्षेत्र में भी अपना योगदान दे रही है । आलोचक जितेंद्र श्रीवास्तव स्त्रियों द्वारा लिखी जा रही कविताओं पर आलोचना किए है ।

उनका कहना है कि " ***स्त्रियों द्वारा लिखी जा रही कविताओं को तब तक नहीं समझा जा सकता जब तक साहचर्य के नए सौन्दर्यशास्त्र को न समझ लिया जाए । यदि स्त्री को महज़ देह ही समझते रहेंगे तो स्वाति मेलकानी जैसी बिलकुल नई कवयित्री की ' मेरे शरीर से बाहर 'जैसे कविता को कैसे समझेंगे ।***" वे साहित्यिक क्षेत्र में स्त्रियों की उपस्थिति एवं योगदान को महत्वपूर्ण माना है । स्त्रियों द्वारा लिखी जा रही कविताओं को धैर्य से पढ़ने की हिदायत देते है । उनका मानना है कि चंपा वैद्य , अर्चना वर्मा ,कमल कुमार ,सुधा अरोड़ा ,चंद्रकांता,राज़ी सेठ ,ममता कलिया,अनामिका ,सविता सिंह ,सुमन केशरी ,अनीता वर्मा ,वीरा,शुभा,क्षमा कौल ,चंद्रकला त्रिपाठी ,रश्मि रेखा ,सविता भार्गव ,निलेश रघुवंशी,निर्मला गर्ग,कात्यायनी, अमिता शर्मा ,पुष्पिता ,सुशीला पुरी,आभा बोधिसत्व ,वजदा ख़ान ,वंदना केंगरानी ,अर्पणा मनोज, लीना मल्होत्रा, रंजना श्रीवास्तव ,वंदना देवेंद्र ,राहुल शाह ,जयश्री राय,तिथि दानी ,वंदना मिश्र, अमिता प्रजापति ,ज्योति चावला ,प्रेमा झा ,वंदना शर्मा ,संध्या नवोदिता,नमिता सत्येन,शिवांजली श्रीवास्तव ,अर्चना भैंसारे, प्रियंका पंडित और देवयानी जैसी कवयित्रियों ने हिन्दी कविता को नई धरती दी है ।

उन्होंने भारतीय समाज के मध्यमवर्ग और निम्नवर्ग की ओर भी नज़र बनाए रखे ।आर्थिक पक्ष पूँजीवादी मूल्यों और सामाजिक पक्ष सामंती मूल्य पर भी अपना विचार व्यक्त किये । मध्यमवर्ग में होने वाली प्रेम विवाह एवं दहेज प्रथा पर भी आलोचको ध्यान दिये हैं ।अंत में आलोचक कहते है कि स्त्री की स्वाधीनता तभी पूर्ण होगी जब पितृसत्तात्मक व्यवस्था का अंत होगा ।

जितेंद्र श्रीवास्तव ने प्रेमचंद द्वारा लिखी गई उपन्यासों के ज़रिए उन्होंने समकालीन परिस्थिति को व्याख्या किए हैं । उनका विचार है की – ***"आज जब धर्म और राष्ट्रीयता जैसे मुद्दों पर लगातार बहसें हो रही हैं,तब यह लिखने में कोई संकोच नहीं है कि प्रेमचंद का लेखन भारतीय समाज की आँखें खोलने की क्षमता से ओत-प्रोत है ।कहना चाहिए कि आज के दौर में वह जीवद्रव्य की तरह है ।"*** धार्मिक पाखंड और जातिवाद का खुलकर विरोध करते हुए वे प्रेमचंद को इस विमर्श की सशक्त सुरुआत करने का श्रेय देते हैं ।राष्ट्रीयता, भारतीय समाज की समस्याएं ,प्रेमचंद के उपन्यासों में स्त्री और दलित विमर्श इन सभी विषयों पर स्पष्ट विचार रखें हैं ।

कविता में प्रतिरोध का सौंदर्य , कविता में प्रतिरोध की भावना पर उनका विचार हैं की -***"हमारे समय में ऐसे कवियों की संख्या बढ़ती जा रही है जो कविता को महज़ तकनीक समझते हैं और जब जी में आता है, कविता लिख लेते हैं"।***

कविता में प्रतिबद्धता का प्रश्न , विचारधारा का प्रश्न आत्मोलोचन का साहस पर भी महत्वपूर्ण टिप्पणी दिये हैं । युवा कवियों पर विचार करते हुए समकालीन कवियों पर आलोचना की नई धारा प्रचलित किये हैं।

आलोचक जितेंद्र श्रीवास्तव का आलोचना कर्म आधुनिक बोध से प्रेरित है और वे पारंपरिक विचारधाराओं को चुनौती देती है एवं नए विचारों ,नए दृष्टिकोण और नए प्रतिमान को बढ़ावा देती है । उनके आलोचना परंपरा में निम्नलिखित आधुनिक बोध से प्रेरित नवीन विचारधारा देखने को मिलता है उन्होंने भूमण्डलीकरण , उदारीकरण और बाज़ारवाद ,प्रवासी साहित्य संस्कृति,समकालीन हिन्दी कविता में विचारधारा का प्रश्न ,प्रतिबद्धता का प्रश्न ,स्त्री दृष्टि , दलित -वंचित जीवन ,साहचर्य का सौंदर्य , भारतीय संस्कृति ,आलोचना की सामाजिकता ,मानवतावाद , समकालीन हिन्दी कविता की भारतीयता सभी विषय पर विचार कर के नए सौंदर्यशास्त्र का स्थापना करते है ।अधुनिकबोध विचारधारा विविध कारोकों से प्रभावित हो चुकी है ।

आलोचक जितेंद्र श्रीवास्तव अपनी आलोचना के माध्यम से सामाजिक मुद्दों पर विचार करके नए दृष्टिकोण का खोज किए है ।जैसे -लड़की जिसकी मैंने हत्या की :अस्वीकार का मानस ,मुग़ल बादशाहों की हिन्दी कविता ,कविता क्या है?,'ध्रुवस्वामिनी ' को पुनः पढ़ते हुए आदि।इस परंपरा में लिखा गया आलोचना अधिकांश समाज में व्याप्त रूढ़ियों को समाप्त करने के दिशा में योगदान देता है ताकि साहित्य के माध्यम से सामाजिक एवं नैतिक विकास हो सके।सामाजिक कुप्रथा'बसवी' से संबंधित कन्नड़ कहानी का आलोचना करते हुए जितेंद्र श्रीवास्तव कहते हैं कि समाज में व्याप्त सभी कुप्रथा जो स्त्री विरोधी और मनुष्यता के विरोधी हो उसे बहिष्कार करना आवश्यक है तभी समाज में नैतिकता , जागरूकता और चेतना का प्रसार हो सकेगा ।

निष्कर्ष : समकालीन हिंदी आलोचना धारा में जितेंद्र श्रीवास्तव का योगदान अतुलनीय है। उपर्युक्त समस्याओं पर उनके विचार पाठकों को यह सोचने के लिए विवश करते हैं कि समकालीन दौर में केवल समस्याओं पर प्रहार करना ही नहीं, बल्कि उन्हें पहचानना और उनके समाधान की दिशा में अग्रसर होना अधिक महत्वपूर्ण है। प्रेमचंद के दौर में लिखे गए साहित्य में जिन समस्याओं का चित्रण मिलता है, वे समकालीन परिस्थितियों में भी नए रूपों में सामने आती दिखाई देती हैं। जितेंद्र श्रीवास्तव की आलोचना साहित्य समकालीन जीवन से उपजी समस्याओं की पहचान करते हुए नए सौंदर्यशास्त्र, नए

प्रतिमान, नई चेतना, नए दृष्टिकोण और मनुष्यधर्मी विचारों के माध्यम से नवीन प्रतिष्ठा की स्थापना करती है।

संदर्भ सूची :

1. विचारधारा ,नए विमर्श और समकालीन कविता ,जितेंद्र श्रीवास्तव ,किताब घर प्रकाशन ,अंसारी रोड ,दरियागंज ,नई दिल्ली -110002,प्रथम संस्करण -2013,पृष्ठ संख्या -15
2. आलोचना का मानुष-मर्म, जितेन्द्र श्रीवास्तव,मानव प्रकाशन,हावड़ा -711101(प.बंगाल) कोलकत्ता,प्रथम संस्करण -2009,पृष्ठ संख्या-17
3. विचारधारा ,नए विमर्श और समकालीन कविता ,जितेंद्र श्रीवास्तव ,किताब घर प्रकाशन ,अंसारी रोड ,दरियागंज ,नई दिल्ली -110002,प्रथम संस्करण -2013,पृष्ठ संख्या -50।
4. आलोचना का मानुष-मर्म ,जितेन्द्र श्रीवास्तव,मानव प्रकाशन,हावड़ा -711101(प.बंगाल) कोलकत्ता,प्रथम संस्करण -2009,पृष्ठ संख्या-127
5. विचारधारा ,नए विमर्श और समकालीन कविता ,जितेंद्र श्रीवास्तव ,किताब घर प्रकाशन ,अंसारी रोड ,दरियागंज ,नई दिल्ली -110002,प्रथम संस्करण -2013,पृष्ठ संख्या -94।